और स्त्री के सम्बन्धों को उठाया गया है। नाटक की विषयवस्तु से स्पष्ट होता है कि नारी को केवल भोग की वस्तु कहा है।

निष्कर्षतः हिंदी साहित्य के नाटककारोंने नारी की स्थिति में हर युग में किस प्रकार परिवर्तन आया है इसे बखूबी अपने नाटकों के जरिये समाज के सामने व्यक्त किया है। कभी वह सामाजिक बंधनो मे जकडी हुई अपने पर हो रहे अन्याय अत्याचार को सहती है तो कभी 'ध्रुवस्वामिनी' या 'शीलवती' बनकर अपने अस्तित्व की लडाई लड़ती है, विद्रोह करती है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1) प्रसादोत्तर कालीन नाटक – डॉ. भूपेन्द्र कलसी, पृ. सं. 119
2) हिंदी नाट्य साहित्य का इतिहास – डॉ. सोमनाथ गुप्त, पृ. सं. 78
3) प्रसादोत्तर कालीन नाटक – डॉ. भूपेन्द्र कलसी, पृ. सं. 120
4) नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल – डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र, पृ. सं. 16
5) आस्था के चरण – डॉ. नगेन्द्र, पृ. सं. 442

भारतेन्दुयुगीन नाटककारों में बालकृष्ण भट्ट [illegible] अम्बिकादत्त व्यास आदि नाटककारों का समावेश होता है। इन नाटककारों ने नारी स्थिति को लेकर नाटक प्रहसन रूपक लिखे हैं। जिसमें नारी संघर्ष उतार चढ़ाव नारी की टीस [illegible] का मार्मिक चित्रण किया है। प्रतापनारायण मिश्र ने 'कलिकौतुक' नाटक में वेश्यावृत्ति जैसी सामाजिक बुराई को [illegible] लाया। भारतेन्दु के 'नीलदेवी' नाटक की नारी [illegible] सभ्यता के रंग में रंगी हुई। वह अपने घर को संभालती है [illegible] आपको बेबसी से मुक्ति दिलाकर स्वयं में परिवर्तन लाती है और अपने पति की हत्या का बदला लेती है। विद्यासुंदर इस नाटक में भारतेन्दुने प्रेमविवाह का समर्थन किया है। हमारी पुरानी दकियानूसी रूढ़ी परंपरा के अनुसार नारीयों को अपने मन के अनुसार वर चुनने की अनुमति नहीं होती। 'गाय भैंस की तरह उसे किसी खूंटे से बाँध दिया जाता है किसी कसाई के हाथों बेच दिया जाता है जो उस पर मनमाने अत्याचार करता है।' 'बालकृष्ण भट्ट' के 'जैसा काम वैसा परिणाम' नाटक की नारी जागरूक है। वह अपने पति के द्वारा प्रताड़ित किए जाने पर उसका डटकर सामना करती है और अपने पति को नाटकीय ढंग से सही रास्ते पर लाती है। इस संदर्भ में भूपेन्द्र कलसीजी का मत महत्वपूर्ण है 'यह नारी नाटककार की कल्पना है। अपने युग से कहीं आगे की जिसमें मूक करूणा नहीं परिस्थितियों की विवशता सी भी नहीं पर विद्रोह है और समझदारी से पुरूष को मार्ग पर लाने की क्षमता है।'

हिंदी नाट्य साहित्य में प्रसादयुग में एक नये अध्याय का आरंभ हुवा। 'प्रसाद के नाटकों में उनके युग की प्रतिध्वनियाँ भी है। देश प्रेम और नारी स्वातंत्र्य का आंदोलन भी वहाँ बिंबित है।'. इस युग में नाटककारोंने नारी के उच्च आदर्शों को नए प्रतिमान दिए। इन्होंने नारी शक्ति को सामाजिक भूमि पर प्रस्तुत करते हुए उसे भारतीय संस्कृति के महान आदर्शों से विभूषित किया है। प्रसादयुग में बद्रीनाथ भट्ट, राधेश्याम कथावाचक, माखनलाल चतुर्वेदी, नारायण प्रसाद आदि नाटककारों का समावेश होता है। प्रसादयुगीन नाटकों में नारी पात्रों में अंतर्द्वंद्व है। इस कारण ही कहीं प्रेम है तो कहीं दैवी और कहीं आसुरी मनोवृत्ति दिखाई देती है। डॉ. नगेंद्र के अनुसार 'नारी पात्रों में उनके हृदय का रूप और प्राणों में बैठी हुई जिज्ञासा की टीस मिलेगी। इस प्रकार प्रसादजीने सभी चरित्रों में अपने व्यक्तित्व की साँस फूँक दी है। स्वभावतः उनमें वह व्यक्तिगत चित्रण भी मिलेगा जो सच्चे अर्थ में नाटकीय कहा जाता है।'. प्रसाद के 'ध्रुवस्वामिनी' इस नाटक में नारी जीवन गाथा के विभिन्न पक्षों को उजागर किया है। इस नाटक की कथावस्तु नारी की यथास्थिति से पुनर्परिभाषा तक की कहानी को बयाँ करती है। एक प्रकार से कहा तो यहाँ नारी का विद्रोह दिखाया है। 'ध्रुवस्वामिनी' 'रामगुप्त' से कहती है 'पुरूषोंने स्त्रियों को अपनी पशु—संपत्ति समझकर उनपर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है वह मेरे साथ नहीं चल सकता।'. 'पृथ्वीनाथ शर्मा' ने अपने 'साध' इस नाटक में स्त्री की उस स्थिति को दर्शाया है जो वैवाहिक बंधन को मानती है और माँ बनने से इन्कार कर देती है।

प्रसादोत्तर काल में शिक्षा के प्रचार प्रसार से जनजागरण हो रहा था और इसी कारण पुरूष और नारी के सम्बधों में तनाव पैदा हो रहा था। इस काल का नाटककार व्यक्ति विशेष रूप से नारी संघर्षों से प्रभावित होता है। इस काल के नाटककारों के सामने नारी के दो रूप आते हैं। एक भारतीय नारी जो पुरूष और समाज के यातना भरे जाल में फँसी हुई मुक्ति की कामना करती है। और दूसरी पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता में रंगी हुई लज्जाहीन मुक्त है जो पुरूष को अपना साथी मानती है उसका उपयोग

हिंदी नाट्य साहित्य में नारी का चित्रण

पीएच.डी शोधछात्रा
कविता दत्तु चव्हाण
हिंदी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे
विश्वविद्यालय पुणे –07

नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। सभी ललित कलाओं में नाट्यकला श्रेष्ठ है। नाटक साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें मानव जीवन सर्वांगरूप से व्यक्त होता है। नाटक एक दृश्य काव्य है, जिसे रंगमंच पर अभिनित किया जाता है। दर्शकों को रसाभिमूख करने की क्षमता नाटक में अधिक है। यही कारण है कि 'भरतमुनि' ने इसे 'नाट्यवेद' की उपाधी से विभूषित किया है। प्राचीन काल में रामलीला, रासलीला, नौटंकी, नाच, तमाशा आदि के द्वारा मनुष्य अपना मनोरंजन करता था। हिंदी साहित्य में 'भारतेन्दु युग' से नाटक का प्रारंभ माना जाता है।

आधुनिक काल में नाटकों की सर्जना प्रचुर मात्रा में हुई है। हिंदी के अनेक नाटकारोंने भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्यकला से प्रभाव ग्रहण करते हुए परंपरा प्रथित एवं परंपरा मुक्त दोनों प्रकार के नाटकों की रचना की है। हिंदी के नाट्य साहित्य को विद्वानोंने अध्ययन सुविधा के लिए भारतेन्दु युग, प्रसाद युग और प्रसादोत्तर युग इन तीन हिस्सों में वर्गीकृत किया है। तीनों युग के प्रत्येक नाटककारने अपनी युगीन परिस्थिती और प्रवृत्ती के आधार पर नाट्यसृजन किया है। इस नाट्य साहित्य के नारी पात्रों पर प्रकाश डालने से हमें एक बात स्पष्ट रूप से ध्यान में आती है, कि प्रत्येग युग में नारी चरित्रों में परिवर्तन आया है। मनुष्य समाज में नारीयो को कहीं पूज्यनीय स्थान है, तो कहीं पर उपेक्षित। वह एक लक्ष्मी है तो वह एक शक्ति भी है। वह एक ही जीवन में कहीं सारे रूपों में जीती है। वह कभी माँ है, तो कभी बेटी, कभी वह पत्नी है। हर खुशी और गम में वह अपने परिवार का साथ देती हैं।

हिंदी साहित्य में भी नारी को अनेक रूपों में चित्रित किया है। वेदों और पुराणों में भी नारी को अलग–अलग रूपों में चित्रित किया है। हर युग में नारी की छवि को कहीं उज्ज्वल किया है तो कहीं धुँधला। साहित्य के विविध विधाओं में जैसे कहानी, उपन्यास, काव्य, निबंध, नाटक आदि में साहित्यकारोंने नारी के जीवन प्रवाह को अंकित किया है। आदिकाल से आजतक नारी का विभिन्न रूपों में चित्रण हुआ है। आदिकाल में वह सामंती व्यवस्था के शिकंजे में फँसी थी, तो मुगल काल में उसे केवल भोग की वस्तु समझा जाता था। संतो ने उसे महामाया मानकर मनुष्य के प्रगतिमार्ग में बाधा कहकर संबोधित किया है, तो सूफी कवियों ने नारी को परमात्मा का रूप माना है। रीतिकालीन कवि भी नारी को केवल भोग्य वस्तु मानते थे। दहेज प्रथा, बालविवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह निषेध, जौहर जैसी कुप्रथाओं के कारण नारी का जीवन नरक बन गया था। अतः हम कह सकते हैं कि नारी के विविध रूपों ने साहित्य और समाज को समय–समय पर प्रभावित किया है। हिंदी का नाट्य साहित्य भी इससे अछूता नहीं है।

भारतेन्दु युग में नारी के सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालने से एक बात स्पष्ट रूप से ध्यान में आती है कि इस युग में नारी के सामाजिक पक्ष को अभिव्यक्ति मिली है। परंतु इस युग नाटककारों में नारी जागरण चेतना की कमी थी। ये पुरानी परंपराओं को आगे लेकर चल रहे थे। परंतु इस समय के नाटककारों ने आनेवाले नाटककारों के लिए एक मजबूत नींव तैयार की। जिससे "नयी रोशनी में नाटककारों ने अनुभव किया कि नारी के परंपरीत जीवन का बंधन, रूढ़ स्वरूप टूटने को है और टूटेगा।"

Vidyawarta Peer Review Research Journal
ISSN 2319 9318, Impact Factor: 6.021

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

करनेवाला नहीं। इस नाटकों में यथार्थता को स्थान मिला। वर्तमान समय की समस्याओ और विसंगतियो को नाटकों में स्थान मिला। 'लक्ष्मीनारायण लाल' के 'अंधा कुआँ' इस नाटक मे ग्रामीण नारी की मजबूरी का कारूणिक चित्रण हुवा है। इस नाटक में 'सूका' इस नारी पात्र के जरिये नारी जीवन की नरकिय यातना और उसके कष्टो को उजागर किया है। इसमें नारी की कुंठा, धुटन का हृदय को छूनेवाला यथार्थ चित्रण हुवा है। नाटक में 'भगौति' कुर और उदंड पति है। वह अपनी पत्नी 'सूका' से पशु जैसा व्यवहार करता है उसे मारता–पीटता है। 'सूका' अपने पूर्व प्रेमी के साथ भाग जाती है, किंतु 'भगौति' उसे वापस लेकर आता है और सारे गाँववालों के सामने कहता है कि अब उसके साथ मारपीट नहीं करेगा। पर घर आकर उसके साथ वही पूर्ववत पशु जैसा व्यवहार करता है, उसे मारता है। इस पर 'भगौति' का भाइ बीच मे आकर 'सूका' को बचाने का प्रयत्न करता है तो 'भगौति' उसे घर से बाहर जाने को कहता है। इस पर 'सूका' कहती है "मुझे अकेली न छोड़ना इस घर में, मुझे यह मार डालेगा, जिन्दा गाड़ देगा धरती में।", अतः नारी पर हो रहे अत्याचार को तथा उससे मुक्त होने के लिए उसकी छटपटाहट को 'लक्ष्मीनारायण लालजीने' इस नाटक में अभिव्यक्ति दी है। 'आषाढ का एक दिन' इस नाटक में 'मोहन राकेश' ने नारी के ऐसे रूप को चित्रित किया है जो प्रेम को सर्वोपरी मानती है। 'मल्लिका' 'कालिदास' की प्रेरणा बनती है, उसके विकास में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करती। कालिदास के प्रति उसकी निस्वार्थ प्रेमभावना है। वह धन, ऐश्वर्य को महत्व न देते हुए कालिदास के प्रति उसकी जो भावनाएँ है उसे महत्व देती हैं। वह अपनी माँ 'अम्बिका' से कहती है "मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह सम्बन्ध सब सम्बन्धो से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है ।" 'उदयशंकर भट्टने' 'विद्रोहिनी अम्बा' इस नाटक में हिंदू विवाह पध्दती का विरोध करनेवाली जागरूक नारी के विद्रोह के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। नाटककार 'सुरेंद्र वर्मा' का दृष्टिकोन प्रगतिशील है। वे स्त्री का अस्तित्व माँ, बहन, पत्नी और सहचरी के रूप में तलाशने की बजाय "स्त्री" रूप में तलाशते है। वे सभी सड़ी–गली, अंधी परंपराओं को सिरे नकार देते हैं। उनका सूर्य की अंतिम किरण से लेकर पहली किरण तक नाटक में उन्होंने नारी मन की पीडा को अभिव्यक्त किया है। इस नाटक नारी पात्र 'शीलवती' अपनी शक्ति से शक्तिशाली अमात्य, परिषद और राजासाहब को धाराशाही कर देती है। कामनटी बनकर वह अशिष्ट और अभद्र वार्तालाप करती है। 'सुरेंद्र वर्मा' स्त्री के इस उग्र, उध्दत, उन्मादपूर्ण और प्रचंड छिन्नमस्ता रूप के जरिये स्त्री के चुप्पीवाले मिथ को तोडते हैं। "मर्यादा...धर्म!.....वैचारिक सम्बन्ध!.....सब मिथ्या। सब पुस्तकीय......लेकिन मुझे पुस्तक नहीं जीना अब! मुझे जीवन जीना है।", अतः इस समय के नाटककारोंने नारी समस्याओं के अनेक पहलुओं को अपने नाटकों द्वारा प्रस्तुत किया है। नारी स्वतंत्रता और नारी चेतना की धारा अब धीरे–धीरे बहने लगी।

21 वीं सदी में शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण नारी की स्थिति में कुछ हद तक सकारात्मक परिवर्तन होता दिखाई देता है। किंतु आज भी कई स्थानों पर नारी को दुय्यम दर्जे का स्थान दिया जाता है। 21 वीं सदी की सुप्रसिध्द महिला नाटककार 'नादिरा बब्बर' ने अपने 'जी जैसी आपकी मर्जी' इस नाटक में नारी की मन की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। हमारे समाज में कई धार्मिक मान्यताएँ है, जिसमें स्त्री का दम घूटता है। स्त्री अस्तित्व को लेकर भी इस नाटक में सवाल उठाए गए है। नारी मन की कोमल भावनाओं बड़े रोमांचक ढंग से यहाँ अभिव्यक्ति मिली है। 'विभारानी' का 'अगले जनम मोहे बिटिया न किजो' इस नाटक में नारी की विडंबनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। नाटक में आम आदमी

24	डॉ. आर. डी. कांबळे,	समकालीन साहित्य आणि चारचौघी नाटकातील स्त्री प्रतिमा	132
25	प्रा. रेखा काशिनाथ पसाले	समकालीन मराठी साहित्य आणि मराठी चित्रपट	135
26	डॉ. प्रियांका शंकर कुंभार	मराठी साहित्य आणि समकालीन अनुवादाचे स्वरूप	138
27	रोहिणी गजानन रेळेकर	प्रेषित : मानव आणि परग्रहवासीयांच्यातील भावबंध	145
28	डॉ. विजय विष्णू लोंढे	हिंदी दलित कहानी साहित्य की सीमाएँ	151
29	डॉ.पंडित बन्ने	सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट : जनसंचार का सशक्त माध्यम	157
30	डॉ. कल्पना किरण पाटोळे	'एक जमीन अपनी' : नारी जीवन की संघर्षगाथा	159
31	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	हिंदीकाव्य के शलाकाव्यक्तित्व: नागार्जुन	164
32	प्रा.नितीन हिंदुराव कुंभार	आज के युग में जनसंचार माध्यमों का योगदान (हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में)	167
33	डॉ. श्रीकांत पाटील	'झुनिया' उपन्यासमें मजदूर विमर्श	171
34	डॉ अजयकुमार कृष्णा कांबळे	आत्मसम्मान के लिए जूझती नारियाँ : एक परिदृश्य	173
35	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	ममता कालिया के उपन्यासों में नारी	176
36	प्रा.भिमाशंकर गायकवाड	हिंदी पत्रकारीता का विकास	178
37	प्रा.अभिजीत कबीर शेवडे	दलित चेतना एवं दलित साहित्य की अवधारणा	181
38	डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील	दोहरा अभिशाप' पर स्त्री विमर्शमूलक वैचारिक मंथन	185
39	डॉ.माल्लोजी अर्जुन जगताप	दलित समाज के प्रतिसवर्णों की मानसिकता का यथार्थ अंकन :आगे रास्ता बंद है	188
40	प्रा. नीता पोपट साठे	"डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के भूमि की ओर' नाटक में चित्रित सामाजिक संवेदना	191
41	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	स्त्री मन की अभिव्यक्ति : एक कहानी यह भी	193
42	प्रा.संगीता विष्णु भोसले	'कस्तूरी कुंडल बसै 'आत्मकथा में नारी संवेदना	195
43	कविता दत्तु चव्हाण	हिंदी नाट्य साहित्य में नारी का चित्रण	200
44	शहिदा नजीर अत्तार	घुमंतू समाज : कल और आज	204
45	प्रा. स्मिता अभिजित वणिरे	''हिंदी साहित्य और सामाजिक संवेदना''	207
46	प्रा. रामहरि काकडे	हिंदी नाटकों मेंस्त्री विमर्श	209
47	प्रा.एल.एस. सिताफुले	ग्रामीण विकासात मत्स्य व्यवसायाची भूमिका विशेष संदर्भ 'रत्नागिरी जिल्हा''	214
48	Dr.S. P. Bansode	Demonetization and Cashless Economy	219
49	Prof. B. A. Tarhal	A Study of Impact of E-Commerce on Indian Economy	222
50	Dr. Barale Santosh I.	Inclusive Education in India: A Critique	228
51	Dr. Bhoge D.B.	Problems and Prospects of Agriculture Labour in India	231
52	डॉ. ए. एस. नलवडे	आर्थिक विकास एक पर्यावरणीय समस्या आणि उपाययोजना	236
53	प्रसाद पांडुरंग दावणे,	भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या सक्षमीकरणामध्ये सेवाक्षेत्राचे योगदान	240
54	प्रा.तटाळे पदमाकर बळीराम	ग्रामीण विकासात सहकारी प्रक्रिया उद्योगाची भूमिका	245
55	Dr. Barale Santosh I.	Globalization and Women Empowerment: A Paradigm Shift	249
56	Dr. Stuti Bhrigu	RECENT TRENDS IN BANKING SECTOR	254

Vidyawarta Peer Review Research Journal
ISSN 2319 9318, Impact Factor: 6.021

करनेवाला नहीं। इस नाटकों में यथार्थता को स्थान मिला। वर्तमान समय की समस्याओं और विसंगतियो का नाटकों में स्थान मिला। 'लक्ष्मीनारायण लाल' के 'अंधा कुआँ' इस नाटक मे ग्रामीण नारी की मजबूरी का कारुणिक चित्रण हुवा है। इस नाटक में 'सूका' इस नारी पात्र के जरिये नारी जीवन की नरकिय यातना और उसके कष्टो को उजागर किया है। इसमें नारी की कुंठा, घुटन का ह्दय को छूनेवाला यथार्थ चित्रण हुवा है। नाटक में 'भगौति' क्रुर और उदंड पति है। वह अपनी पत्नी 'सूका' से पशु जैसा व्यवहार करता है, उसे मारता–पीटता है। 'सूका' अपने पूर्व प्रेमी के साथ भाग जाती है, किंतु 'भगौति' उसे वापस लेकर आता है और सारे गाँववालों के सामने कहता है कि अब उसके साथ मारपीट नहीं करेगा। पर घर आकर उसके साथ वही पूर्ववत पशु जैसा व्यवहार करता है, उसे मारता है। इस पर 'भगौति' का भाइं बीच मे आकर 'सूका' को बचाने का प्रयत्न करता है तो 'भगौति' उसे घर से बाहर जाने को कहता है। इस पर 'सूका' कहती है "मुझे अकेली न छोड़ना इस घर में, मुझे यह मार डालेगा, जिन्दा गाड़ देगा धरती में।", अतः नारी पर हो रहे अत्याचार को तथा उससे मुक्त होने के लिए उसकी छटपटाहट को 'लक्ष्मीनारायण लालजीने' इस नाटक में अभिव्यक्ति दी है। 'आषाढ का एक दिन' इस नाटक में 'मोहन राकेश' ने नारी के ऐसे रूप को चित्रित किया है जो प्रेम को सर्वोपरी मानती है। 'मल्लिका' 'कालिदास' की प्रेरणा बनती है, उसके विकास में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करती। कालिदास के प्रति उसकी निस्वार्थ प्रेमभावना है। वह धन, ऐश्वर्य को महत्व न देते हुए कालिदास के प्रति उसकी जो भावनाएँ है उसे महत्व देती हैं। वह अपनी माँ 'अम्बिका' से कहती है "मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह सम्बन्ध सब सम्बन्धो से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है ।" 'उदयशंकर भट्टने' 'विद्रोहिनी अम्बा' इस नाटक में हिंदू विवाह पध्दती का विरोध करनेवाली जागरूक नारी के विद्रोह के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। नाटककार 'सुरेंद्र वर्मा' का दृष्टिकोन प्रगतिशील है। वे स्त्री का अस्तित्व माँ, बहन, पत्नी और सहचरी के रूप में तलाशने की बजाय "स्त्री" रूप में तलाशते हैं। वे सभी सड़ी–गली, अंधी परंपराओं को सिरे नकार देते हैं। उनका सूर्य की अंतिम किरण से लेकर पहली किरण तक नाटक में उन्होंने नारी मन की पीडा को अभिव्यक्त किया है। इस नाटक नारी पात्र 'शीलवती' अपनी शक्ति से शक्तिशाली अमात्य, परिषद और राजासाहब को धाराशाही कर देती है। कामनटी बनकर वह अशिष्ट और अभद्र वार्तालाप करती है। 'सुरेंद्र वर्मा' स्त्री के इस उग्र, उध्दत, उन्मादपूर्ण और प्रचंड छिन्नमस्ता रूप के जरिये स्त्री के चुप्पीवाले मिथ को तोडते हैं। "मर्यादा...धर्म!.....वैचारिक सम्बन्ध!.....सब मिथ्या। सब पुस्तकीय......लेकिन मुझे पुस्तक नहीं जीना अब! मुझे जीवन जीना है।", अतः इस समय के नाटककारोंने नारी समस्याओं के अनेक पहलुओं को अपने नाटकों द्वारा प्रस्तुत किया है। नारी स्वतंत्रता और नारी चेतना की धारा अब धीरे–धीरे बहने लगी।

21 वीं सदी में शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण नारी की स्थिति में कुछ हद तक सकारात्मक परिवर्तन होता दिखाई देता है। किंतु आज भी कई स्थानों पर नारी को दुय्यम दर्जे का स्थान दिया जाता है। 21 वीं सदी की सुप्रसिध्द महिला नाटककार 'नादिरा बब्बर' ने अपने 'जी जैसी आपकी मर्जी' इस नाटक में नारी की मन की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। हमारे समाज में कई धार्मिक मान्यताएँ है, जिसमें स्त्री का दम घूटता है। स्त्री अस्तित्व को लेकर भी इस नाटक में सवाल उठाए गए है। नारी मन की कोमल भावनाओं बड़े रोमांचक ढंग से यहाँ अभिव्यक्ति मिली है। 'विभारानी' का 'अगले जनम मोहे बिटिया न किजो' इस नाटक में नारी की विडंबनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। नाटक में आम आदमी

04 Jan. 2020

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www. विद्यावार्ता .कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 6.021 iijif FACTOR

Cosmos IMPACT FACTOR 5.234

Govt. of India, Trade Marks Registry Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com